© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 09 Issue: 01 | January - March 2018
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

भारत में लिपि का उद्भव एवं विकास (ब्राह्मी के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ0 राम अधार सिंह यादव
एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी–विभाग
एस0 एम0 कॉलेज चन्दौसी (सम्भल)

जिस प्रकार भावों की सम्यक अभिव्यक्ति के लिए प्रयोग में आने वाले ध्वनि-समूह को भाषा कहते हैं, उसी प्रकार भाषा (ध्वनि-संकेत) को किसी पटल पर अंकित करने की सम्पूर्ण व्यवस्थित प्रणाली को लिपि कहते हैं। यहाँ यह भी ध्यातव्य है कि भाषा और लिपि दोनों परस्पर सम्बद्ध होते हुए भी पृथक् हैं। भाषा ध्वनियों की व्यवस्था है और लिपि वर्णों का व्यवस्थित भवरूप है। लिपि भाषा को मूर्त स्थायित्व प्रदान करती है। लिपि के आविष्कार ने मानव की विकास-यात्रा में एक सर्वथा नया आयाम जोड़ दिया। पिछली सदी के महान् खोजकर्ता और भाषाविद् Edward Clodd ने इस सम्बन्ध में अपनी पुस्तक The History of Alphabet में कहा है, "भाषा के आविष्कार ने यदि मानव जाति के लिए बर्बरता से सभ्यता की ओर जाने वाले मार्ग का उद्घाटन किया तो दूसरी ओर लिपि के आविष्कार ने उसके निरन्तर विकास की असीम सम्भावनाओं के द्वार को सदा-सदा के लिए खोल दिया।" इन तथ्यों के आलोक में हम कह सकते हैं कि भाषा का सम्यक विकास तभी सम्भव हुआ, जब उसे नाद-स्वरूप के साथ-साथ दृश्य - स्वरूप भी प्राप्त हुआ। इन दोनों अन्योन्याश्रित सम्बन्धों को ध्यान में रखते हुए प्रख्यात भाषा विज्ञानी डॉ० भोलानाथ तिवारी ने इसे यूँ स्पष्ट किया है, "भाषा की उत्पत्ति भावों को ध्वनियों द्वारा व्यक्त करने के लिए हुई और लिपि की उत्पत्ति उसे चिह्नों या चिन्हों द्वारा प्रकट करने के लिए। कदाचित् यह कार्य भाषा के कुछ विकसित हो जाने के बाद हुआ होगा ।"1

जहाँ तक लिपि की उत्पत्ति का प्रश्न है, इस संबंध में सामान्यतया दो मत प्रचलित हैं, प्रथम यह कि लिपि का जन्म भाषा से पूर्व अथवा उसके समानान्तर हुआ । द्वितीय यह कि लिपि का जन्म भाषा के बाद हुआ। दुनिया की अधिकांश प्राचीन सभ्यताओं में लिपि की उत्पत्ति का दैवीय सिद्धान्त स्वीकार्य रहा है, जैसे भारतीय अपनी लिपि को ब्रह्मा से, बेबीलोन निवासी अपनी लिपि को अपने

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 09 Issue: 01 | January - March 2018
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

देवता 'नेवो' से, मिस्र के लोग अपने देवता 'थाथ' व 'आइसिस' से प्राचीन यहूदी 'मोजेज' से एवं यूनानी अपनी लिपि की उत्पत्ति 'हेमेस', 'आप्यूस' व 'लिनोज' आदि से मानते हैं। नारद स्मृति का यह ऐसी ही घोषणा करता है, 'यदि ब्रह्मा ने लेखन-कला का आविष्कार नहीं किया होता तो यह संसार अभी तक वर्तमान सुव्यवस्था और सुस्थिति तक नहीं पहुँच पाता' :

नाकरिष्यद्यदि ब्रह्मा लिखितं चक्षुरुत्तमम् ।
तत्रेयमस्य लोकस्य नाभविष्यति शुभा गतिः।

किन्तु वैज्ञानिक चिन्तन - प्रधान इस आधुनिक युग में इन तथ्यों और विचारों के लिए कोई स्थान नहीं है। वस्तुतः मनुष्य के इंगित या संकेतों द्वारा भावाभिव्यक्ति के चित्रण से लिपि का जन्म हुआ । इस सन्दर्भ में डॉ० बाबूराम सक्सेना का यह कथन द्रष्टव्य है, "प्रथम, सम्पूर्ण बात या वाक्य का बोध कराने वाले चित्र, फिर इन चित्रों से विकसित हुए उनके उद्बोधक संकेत, और इनसे अक्षर लिपि के विकास में यह क्रम रहा।[2] भाषा वैज्ञानिक डॉ० उदय नारायण तिवारी ने भी चित्र लिपि को ही आरम्भिक लिपि माना है- " लिखने की कला का आद्यरूप वास्तव में चित्रलिपि ही है। और इससे क्रमशः भाव लिपि तथा ध्वन्यात्मक लिपि के दो रूपों-अक्षरात्मक एवं वर्णनात्मक लिपि का विकास हुआ।[3] आज हमारे समक्ष विकसि वर्णनात्मक लिपियाँ विद्यमान हैं, जो प्रत्येक भाव या विचार को भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करने में सक्षम हैं।

भारत में लिपि का विकास

भारतवर्ष में लिपि के प्राचीनतम प्रयोग के अनेक प्रमाण वैदिक वाङ्गमय में मिलते हैं, जिनसे ये पता चलता है कि वैदिक युग या उससे पूर्व से ही भारतीयों को लिपि के प्रयोग में महारत हासिल थी। ऋग्वेद के प्राचीनतम अंश दशम मण्डल में राजा सावर्णि द्वारा एक हजार 'अष्टकर्णी' गायों के दान का उल्लेख मिलता है। 'अष्टकर्णी" का अभिप्राय है, जिनके कानों पर आठ के अंक का चिह्न अंकित हो। यह इस तथ्य का प्रमाण है कि आर्यजन अंकों को लिखना जानते थे। समूचे वैदिक वाङमय में स्थान-स्थान पर भिन्न-भिन्न छन्दों का उल्लेख मिलता है, जो बिना लिपि-ज्ञान के निरर्थक होता इसके साथ-साथ तैत्तिरीय संहिता, मैत्रायणी संहिता' काठक संहिता तथा शतपथ ब्राह्मण' में अनेक छन्दों के चरण एवं उनकी मात्राओं

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 09 Issue: 01 | January - March 2018
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

का स्पष्ट परिचय दिया गया है। छन्दों की मात्राओं की गणना, छन्दों का सूक्ष्म विवेचन आदि, अति प्राचीन काल से भारतीय लेखन-कला का स्पष्ट एवं पुष्ट प्रमाण है, क्योंकि लेखन-कला के अभाव में छन्दों का वर्गीकरण-विश्लेषण सम्भव ही नहीं है। इसके अतिरिक्त महाभारत के आदि पर्व में, " वशिष्ठ धर्मसूत्र में, 12 अर्थशास्त्र में अनेक स्थलों पर एवं वात्स्यायन के कामसूत्र' में लेखन-कला के साक्ष्य भरे पड़े हैं।

अब जहाँ तक भारत में उपलब्ध प्राचीनतम लिपि का प्रश्न है तो इस महादेश की सर्वाधिक प्राचीन लिपि सिन्धु घाटी की लिपि है। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई से पूर्व भारत की प्राचीनतम लिपि ब्राह्मी थी, किन्तु सिन्धु घाटी सभ्यता के विभिन्न स्थलों के उत्खनन से प्राप्त सामग्रियों के ऊपर अंकित लेख चिह्नों के प्रकाश में आने के पश्चात् सैंधव लिपि भारतवर्ष की प्राचीनतम लिपि सिद्ध होती है। किन्तु दुर्भाग्य से सैन्धव लिपि को अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है। फिर भी यह निर्विवाद रूप से भारत की प्राचीनतम लिपि है, जिसका सिन्धु सभ्यता के अस्तित्व के समय (ईसा से 2500 वर्ष पूर्व) प्रचलन था। सैन्धव लोगों के इसी प्रयास ने आगे चलकर लिपि के विकास की आधारशिला को तैयार किया। डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी इसे इस प्रकार स्पष्ट करते हैं "मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा की लिपि सैकड़ों मुद्राओं पर प्राप्त है, जिसमें सम्भावित रूप से धार्मिक अर्थ वाले अनेक प्रकार के मुख्यतया साँड़ों तथा अन्य प्राणियों, कुछ मानवों एवं बहुत-सी अज्ञात वस्तुओं की आकृतियों के विशिष्ट आलेखन है। इस लिपि में विकास की विभिन्न कक्षाएँ द्रष्टव्य हैं, यथा, चित्र, लिपि-चित्र और अक्षर-लिपि।"[4] अधिकांश भारतीय आचार्यों ने सैन्धव लिपि को ही भारत की प्राचीनतम पठनीय लिपि-ब्राह्मी का मूल स्रोत या प्रेरणा स्वीकार किया है।

ब्राह्मी लिपि

अपठनीय या पढ़ी न जा सकने के कारण यदि सैन्धव लिपि को किनारे कर दें, तो भारतीय उपमहाद्वीप की प्राचीनतम लिपि 'ब्राह्मी लिपि है। यदि सैन्धव लिपि-चिह्नों को छोड़ दें तो भारत में लिपि का प्राचीनतम साक्ष्य उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थनगर जिले के पिपरहवा नामक स्थान से प्राप्त हुआ है, जो एक स्तूप के भीतर से मिले हुए पात्र पर अंकित है, इसका समय 487 ई०पू० के कुछ बाद का है। एक अन्य

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 09 Issue: 01 | January - March 2018
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

साक्ष्य राजस्थान के अजमेर जिले के बउली नामक ग्राम से प्राप्त हुआ है, जो एक स्तम्भ पर अंकित लेख का अंश है, जिसका समय 443 ई०पू० निश्चित किया गया है। 16 ये दोनों ब्राह्मी लिपि के प्राचीनतम साक्ष्य हैं। इसके बाद अशोक के शिलालेखों में इस लिपि के व्यापक दर्शन होते हैं ? पुरातात्विक और साहित्यिक साक्ष्यों के आधार पर यह निश्चित होता है कि ई०पू० पाँचवीं शताब्दी से ईसवी सन् की तीसरी शताब्दी तक भारत में मुख्य रूप से ब्राह्मी और आंशिक रूप से खरोष्ठी लिपियाँ प्रचलित थीं। अनेक शिलालेख, राजकीय आदेश व मुद्राएँ इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं। प्रख्यात् भाषाविद् डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा ने दोनों लिपियों के प्रसार को रेखांकित किया है, "एक बायीं से दायीं ओर लिखी जाती थी, जिसका नाम ब्राह्मी था और दूसरी दायीं से बायीं ओर लिखी जाती थी जिसे लोग खरोष्ठी कहते थे। खरोष्ठी का प्रचार मुख्य रूप से पश्चिमोत्तर प्रदेश में था, किन्तु ब्राह्मी सम्पूर्ण देश में प्रचलित होने के कारण, एक प्रकार से तत्कालीन भारतवर्ष की राष्ट्रीय लिपि थी।[5]

उपर्युक्त दोनों ही लिपियों के सम्बन्ध में महामहोपाध्याय पं० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने अत्यन्त स्पष्ट विश्लेषण किया है, "... उस समय इस देश में दो लिपियाँ प्रचलित थीं, एक तो नागरी की नाई (तरह) बांयी तरफ से दाहिनी ओर लिखी जाने वाली सार्वदेशिक, और दूसरी फ़ारसी की तरह दाहिनी ओर से बायीं ओर लिखी जाने वाली एकदेशिक । इन लिपियों के प्राचीन नाम क्या थे इस विषय में ब्राह्मणों की पुस्तकों में तो कुछ भी लिखा नहीं मिलता। जैनों के 'पन्नवण सूत्र' और 'समवायांगसूत्र' में 18 लिपियों के नाम मिलते हैं, जिनमें सबसे पहली नाम 'बंभी' है, और भगवतीसूत्र में 'बंभी' (ब्राह्मी) लिपि को नमस्कार करके (नमो बंभीए लिविए) सूत्र का प्रारम्भ किया गया है। बौद्धों की संस्कृत पुस्तक 'ललित विस्तार' में 64 लिपियों के नाम मिलते हैं, जिनमें सबसे पहला 'ब्राह्मी' और दूसरा 'खरोष्ठी' है।"[6]

ब्राह्मी के नामकरण के सम्बन्ध में आचार्यों और भाषाविदों में अनेक मत प्रचलित हैं - (क) — ब्रह्मा से उत्पन्न होने के कारण इसका नाम ब्राह्मी पड़ा। इस सम्बन्ध में एक चीनी साहित्यिक साक्ष्य का उल्लेख महामहोपाध्याय पं० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने अपनी कृति 'भारतीय प्राचीन लिपिमाला' में किया है।"[7] (ख)- ब्रह्मज्ञान (वेद) की रक्षा के लिए इस लिपि का निर्माण हुआ, फलतः इसे ब्राह्मी कहा गया

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 09 Issue: 01 | January - March 2018
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

। (ग) ब्राह्मणों द्वारा प्रयुक्त होने के कारण इसे 'ब्राह्मी' कहा गया। (घ) ब्रह्मा नामक किसी आचार्य द्वारा प्रणीत होने के कारण इसे 'ब्राह्मी' नाम से अभिहित किया गया ।

इस प्राचीन लिपि की उत्पत्ति को लेकर भी विद्वानों में मतभेद रहे हैं, जिन्हें हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं। इनमें प्रथम पक्ष उन यूरोपीय और गैर भारतीय विद्वानों का है, जो साम्राज्यवादी -उपनिवेशवादी सोच व कुण्ठा से ग्रस्त रहे हैं। उन्होंने ब्राह्मी लिपि की उत्पत्ति की अनेक कहानियाँ गढ़ी हैं और इसे भारतवर्ष से बाहर की दूसरी लिपियों से उत्पन्न बतलाया है। इनमें प्रमुख नाम हैं-जोसेफ प्रिंसेप, सेनार्ट, विल्सन, विलियम जोन्स, बेनफी, वेस्टरगार्ड, मैक्समूलर, फ्रेडरिक मूलर, विटनी, पॉल गोल्डस्मिथ, लेनोर्माण्ट, आइजक टेलर, एडवर्ड क्लॉड, वूलर आदि । द्वितीय पक्ष उन विद्वानों का है, जो ब्राह्मी को पूर्णतः भारतीय लिपि मानते हैं, जिसका आविष्कार भारतीयों द्वारा किया गया। इस समूह में कई यूरोपीय विद्वान भी शामिल रहे हैं। इस विचारधारा के प्रमुख विद्वान थे-महा. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, प्रो. हुल्श, डॉ० फ्लीट, एडवर्ड यामस, प्रो. लासन, जनरल कनिंघम तथा अनेक भारतीय विद्वान ।

ब्राह्मी की विशेषताएँ

एक आदर्श लिपि में प्रत्येक ध्वनि के उच्चारण के लिए असंदिग्ध रूप से एक पृथक् संकेत होना चाहिए अर्थात् जो बोला जाय वही लिखा जाय, और जो लिखा जाय, वह ठीक वैसा ही पढ़ा जाय। ब्राह्मी लिपि की यह सर्वप्रमुख विशेषता है। यह अपने समय की सर्वाधिक वैज्ञानिक एवं आदर्श लिपि थी। इसकी लोकप्रियता का आधार भी है और जहाँ तक इसकी लोकप्रियता के प्रमाण का प्रश्न है, तो सबसे बड़ा प्रमाण है-जैन एवं बौद्ध परम्परा के ऋषियों-मुमुक्षुओं ने इसे अपनी विचारधारा, अपने वाङ्मय के प्रचार-प्रसार के माध्यम के रूप में स्वीकार किया, जबकि ये दोनों सम्प्रदाय सनातन (हिन्दू) धर्म ग्रन्थों की प्रमुख भाषा संस्कृत से ज्यादातर परहेज करते थे।

यह लिपि बायीं से दायीं ओर लिखी जाती थी। इसके अक्षर सीधे थे और अधिकांश अक्षरों के अन्त में और, कुछ के प्रारम्भ तथा अन्त दोनों स्थानों में सीधी रेखाएँ जुड़ी होती थीं, लेकिन प्रारम्भ में सीधी रेखा से युक्त अक्षरों का इसमें सर्वथा अभाव था। इस तरह इसमें नियमित रेखाओं से वर्ण-रचना की

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 09 Issue: 01 | January - March 2018
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

प्रवृत्ति एवं प्रक्रिया के स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं। इस लिपि के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए महामहोपध्याय ओझा जी का यह कथन "मनुष्य की बुद्धि के सबसे बड़े महत्त्व के दो कार्य, भारतीय ब्राह्मी लिपि और वर्तमान शैली के अंकों की कल्पना है। ...इसमें प्रत्येक आर्य-ध्वनि के लिए अलग-अलग चिह्न होने से जैसा बोला जावे, वैसा ही लिखा जाता है और जैसा लिखा जावे, वैसा ही पढ़ा जाता है तथा वर्णक्रम वैज्ञानिक रीति से स्थिर किया गया है। यह किसी अन्य लिपि में नहीं है ।"[8]

ब्राह्मी से विकसित प्रमुख भारतीय लिपियाँ

चौथी शताब्दी के मध्य तक ब्राह्मी की दो शैलियाँ प्रचलन में दिखाई पड़ने लगती हैं- उत्तरी शैली व दक्षिणी शैली। ब्राह्मी की उत्तरी शैली से कुल 24 लिपियों का विकास हुआ है, लेकिन इनमें से चार लिपि-शैलियां प्रमुख रही हैं:

(क) गुप्त लिपि : गुप्त राजवंश के समय में यह लिपि प्रचलित थी। इसके अनेक वर्ण देवनागरी लिपि से मिलते जुलते हैं। यह पाँचवीं सदी के अन्त तक वर्तमान थी।

(ख) कुटिल लिपि : यह गुप्त लिपि का ही विकसित रूप है। इसमें वर्णों और मात्राओं की आकृति टेढ़ी होती थी, इसीलिए इसे कुटिल लिपि कहा जाता है। यह छठीं शताब्दी से आठवीं शताब्दी के अन्त तक प्रचलन में थी।

(ग) प्राचीन नागरी लिपि : इस लिपि का प्रथम प्रयोग गुजरात नरेश जयभट्ठ (आठवीं सदी) के एक शिलालेख में मिलता है। आठवीं और नवीं सदी में यह लिपि राष्ट्रकूट, विजयनगर, कोंकण और बड़ौदा राज्य में व्यापक प्रचलन में थी। धीरे-धीरे यह सम्पूर्ण उत्तर भारत में देश की पश्चिमी सीमा से लेकर बंगाल की सीमा तक लोकप्रिय हो गयी थी। इसी प्राचीन नागरी से कैथी, गुजराती, मराठी व बंगला आदि लिपियों का विकास हुआ। प्राचीन बंगला का विकास दसवीं सदी में हुआ, उसी से वर्तमान बंगला, मैथिल एवं उड़िया लिपियाँ विकसित हुईं।

(घ) शारदा लिपि : इस लिपि का प्रचार अखण्ड कश्मीर और अखण्ड पंजाब में था। इसी से वर्तमान कश्मीरी, सिंधी, टक्करी व गुरुमुखी लिपियाँ विकसित हुई हैं।

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 09 Issue: 01 | January - March 2018
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

ब्राह्मी की दक्षिणी शैली उत्तरी शैली की अपेक्षा ज्यादा लिपियाँ विकसित हुईं, जिनमें अनेक भारतवर्ष से बाहर की भी लिपियाँ हैं। इसकी दक्षिणी धारा से विकसित प्रमुख लिपियाँ हैं-

(क) पश्चिमी लिपि : चौथी और पाँचवीं सदी में इसका प्रयोग काठियावाड़, नासिक, सतारा व खानदेश में प्रचलन में था। इसकी अनेक स्थानीय शैलियाँ थीं ।

(ख) मध्य प्रदेशी : ब्राह्मी से विकसित यह लिपि पाँचवीं से आठवीं सदी तक उत्तरी कर्नाटक, मध्य प्रदेश... एवं बुन्देलखण्ड में प्रचलित थी ।

(ग) तेलुगु - कन्नड़ : वर्तमान तेलुगु और कन्नड़ लिपियाँ इसी से विकसित हुई है। पाँचवीं से चौदहवीं सदी तक इसके दर्जनों रूप दिखाई देते है । यह लिपि दक्षिणी महाराष्ट्र, उत्तर-पूर्वी आन्ध्र क्षेत्र एवं मैसूर राज्य में प्रचलन में थी।

(घ) ग्रन्थ लिपि : ब्रिटिश राज में जो मद्रास रेजीडेंसी का परिक्षेत्र था, यह लिपि उसी क्षेत्र के आस-पासं सातवीं से पन्द्रहवीं शताब्दी तक व्यवहार में भी । इस लिपि के अनेक रूप विकसित हुए। मूल रूप से इस लिपि का प्रयोग संस्कृत ग्रन्थों को लिखने के लिए होता था, शायद इसीलिए इसका नाम ग्रन्थ लिपि पड़ा होगा ।

(ङ) तमिल लिपि : यह लिपि सातवीं शताब्दी से आज तक थोड़े-बहुत - हेर-फेर के साथ प्रयोग हो रही है। इसके अनेक अक्षर ग्रन्थ लिपि के अक्षरों से मिलते-जुलते हैं।

(च) कलिंग लिपि : इस लिपि के अक्षर समकोण की तरह बनते हैं। यह सातवीं से ग्यारहवीं शताब्दी तक व्यवहार में थी। इसमें नागरी, तेलुगु, कन्नड़, देवनागरी लिपि और ग्रन्थ लिपियों का मिश्रण दिखाई पड़ता है।

ब्राह्मी लिपि की उत्तरी धारा से प्राचीन देवनागरी लिपि का विकास हुआ था। समय के साथ यही प्राचीन नागरी संशोधित-परिवर्धित होते हुए वर्तमान देवनागरी के रूप में हमारे समक्ष है। वर्तमान में यह भारत में सर्वाधिक लोगों द्वारा प्रयुक्त लिपि है। आठवीं सदी के मध्य से लेकर आज तक इस लिपि ने एक लम्बी विकास-यात्रा तय की है चौदहवीं सदी तक इस लिपि के वर्णों पर शिरोरेखा नहीं थी। किन्तु धीरे-

© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 09 Issue: 01 | January - March 2018
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

धीरे इस लिपि के वर्णों को सुन्दर बनाने की चेष्टा जारी रही और चौदहवीं सदी के अन्त में इसका रूप स्थिर हो गया, जो आजकल हमारे समक्ष है। इसका वर्तमान स्वरूप इस प्रकार है :

1- इस लिपि में वर्तमान में कुल 48 मूल चिन्ह हैं, जिनमें 14 स्वर व संध्यक्षर तथा 34 मूल व्यंजन हैं।

2- देवनागरी एक अर्द्ध अक्षरात्मक लिपि है।

3- देवनागरी के व्यंजन उच्चारण स्थान के क्रमानुसार कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त और ओष्ठ से उच्चारित होने वाले पाँच वर्गों में विभक्त किये जाते हैं।

4- इस लिपि के समस्त व्यंजन सात वर्गों में विभक्त हैं-कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठय्, ऊष्म तथा अन्तस्थ।

5- सभी लिपि - चिह्नों के नाम वही है, जिन ध्वनियों के लिए वे प्रयुक्त होते हैं।

6- इसमें ठीक वैसा ही लिखते हैं, जैसा उच्चरित होता है।

7– प्रत्येक ध्वनि के लिए एक निश्चित प्रतीक है। ऐसा नहीं है कि कभी 'क' के लिए 'K' और कभी 'C' लिखा जाए।

8– इसमें मौन वर्णो (Silent Letters) का भी अभाव होता है अर्थात् इसमें वही संकेत लिखे जाते हैं, जो उच्चारित भी होते है।

9– भारतीय संविधान में इसे राष्ट्र–लिपि का स्थान भी प्राप्त है।

संदर्भः

1– भोलानाथ तिवारी भाषा विज्ञान, किताब महल, दिल्ली 1951 पृष्ठ 472

2– सक्सेना बाबूराम– सामान्य भाषा विज्ञान हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग 1983 पृष्ठ 169

3–डॉ0 उदय नारायण तिवारी– हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली 1984 पृष्ठ 547

4– चटर्जी डॉ0 सुनीति कुमार– भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी मुंशीराम मनोहरलाल दिल्ली 1879 पृष्ठ 46

5– हिन्दी भाषा का इतिहास डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा हिन्दुस्तानी एकेडमिक प्रयाग 1933 पृष्ठ 84

6– प्राचीन भारतीय लिपिमाला डॉ0 गौरी शंकर हीराचन्द्र ओझा राजस्थानी ग्रंथाकार जोधपुर 1918 पृष्ठ 2

7– प्राचीन भारतीय लिपिमाला डॉ0 गौरी शंकर हीराचन्द्र ओझा राजस्थानी ग्रंथाकार जोधपुर 1918 पृष्ठ 18

8– प्राचीन भारतीय लिपिमाला डॉ0 गौरी शंकर हीराचन्द्र ओझा राजस्थानी ग्रंथाकार जोधपुर 1918 पृष्ठ 07